KARNATAKA SCHOOL EXAMINATION AND ASSESSMENT BOARD

II PUC EXAM- 2 APRIL/MAY- 2025

SUBJECT: 03- HINDI SCHEME OF EVALUATION MAX MARKS: 80

QN. NO.	खंड -'क'	MARKS
I अ)		
1.	iv) पक्का कुआं	1
2.	iii) प्रेमचंद	1
3.	i) सुशीला	1
4.	iv) समय	1
5.	i) येन	1
6.	iii) विकास स्वरूप	1
7.	i) बंधन	1
8.	ii) कन्नडनाडु	1
9.	ii) नायब तहसीलदार	1
10.	iv) बेला	1
आ)		
11.	का	1
12.	की	1
13.	से	1
14.	ने	1
15.	में	1
इ)		
16.	a) iii) चकित होकर देखना	1
	b) vi) बेकार बैठना	1
	c) iv)इच्छानुसार कार्य करवाना	1
	d) v)इज्जत बढ़ाने वाला	1
	e) i) टाल - मटोल करना	1
	खंड - 'ख'	
II.		
अ)		
17.	झूठ की उत्पत्ति पाप , कुटिलता और कायरता के कारण होती है। बहुत से लोग नीति और आवश्यकता के अनुसार झूठ बोलने का बहाना बनाते है। संसार मे बहुत से ऐसे नीच लोग है जो झूठ बोलकर अपने को बचा लेते है। लेकिन यह सब सच नहीं। झूठ बोलना पाप का ही काम है और उससे कोई काम भी नहीं होता झूठ बोलना और भी कई रूपों मे देख पड़ता है। जैसे चुप रहना , किसी बात को बढ़ाकर कहना , किसी बात को छुपाना, भेद बदलना, झूठ-मूठ दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना , प्रतिज्ञा देकर पूरा न करना,सत्य को न बोलना आदि।	3

QN. NO.		MARKS
18.	गंगा मैया के अनुसार समाज में प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। देश में धर्म को जीवन से अलग कर रखा है। महंगाई , रिश्वतखोरी , पाशविकता बढ़ती जा रही है। राजनीति के बारे मे तो 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' की स्तिथि हो रही है।	3
19.	मैसूर राज्य के विकास मे विश्वेश्वरैया के प्रमुख कार्य तीन कह सकते है। कावेरी पर बाँध। यह बाँध "कृष्णराज सागर" के नाम से मशहूर है। इस बाँध के निर्माण से उद्योगों के लिए बिजली , सिंचाई के लिए पानी भी मिला। मैसूर को सुंदर बनाने की दशा मे बृंदाबन की योजना ,शासन की व्यवस्था मैं भी कई सुधार किए। पंचायतों की व्यवस्था की। आर्थिक विकास के लिए बैंक की स्थापना , मैसूर राज्य के लिए विश्वविध्यालय की स्थापना आदि महत्वपूर्ण कार्य किए ।	3
20.	शामनाथ की माँ सुबह से घर मैं चली तैयारी देख रही थी। उसका दिल धडक रहा था। सोच रही थी कि बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाए। शामनाथ जब उसे बरामदे मे बैठने को कहता है, वहाँ से गुसलखाने के रास्ते कोठरी मे जाने को कहता है तो अवाक बेटे का चेहरा देखने लगी। खर्राटे की बात सुनकर लज्जित भी हुई । अचानक जब चीफ सामने आए तो बहुत हड़बड़ाई उससे भी ज्यादा वह अपने बेटे से डर रही थी। आँखों से ठीक से न देख पाते हुए भी अपने बेटे के तरक्की की बात सुनकर फुलकारी भी बनाने का वादा करती है। माँ दिल-ही -दिल में बेटे के उज्वल भविष्य की कामनायें करने लगी।	3
आ)		
21.	पाठ का नाम - सुजान भगत लेखक का नाम - प्रेमचंद इस वाक्य को भोला अपने पिता के बारे मे अपनी माँ बुलाकी से कहता है। बुलाकी एक दिन ओखली में दाल छाँट रही थी । एक भिक्षुक द्वार पर आकर चिल्लाने लगता है। भोला अपनी माँ से भिक्षुक को कुछ देने के लिए कहता है, बुलाकी जब सुजान के बारे मे पूछती है तो भोला व्यंग्य से उपर्युक्त वाक्य कहता है।	1 2
22.	पाठ का नाम - एक कहानी यह भी लेखिका का नाम - मन्नू भण्डारी इस वाक्य को लेखिका के पिताजी माँ से कहा। आजाद हिन्द फौज के मुकदमे का सिलसिला था। हड़ताल का आह्वान था। स्कूल,कॉलेज और दुकाने सभी बंद करवा रहे थे। शाम को अजमेर के बीच चौराहे पर मन्नू भण्डारी ने भाषणवाजी की थी। लेखिका के पिताजी के एक दकियानूसी मित्र ने पिताजी को दोपहर मे घर आकार मन्नू के बारे मे आग लगाकर चले गए थे। लड़कों के साथ हड़ताल में हुड़दंग मचाना हमारे घरों की लड़कियों को शोभा नहीं देता। तब सभी सुनकर सारे दिन पिताजी भभकते रहे "बस अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। बंद करो इस मन्नू का घर से बाहर निकलना"।	1 2
23.	पाठ का नाम - भोलारम का जीव लेखक का नाम - हरिशंकर परसाई यमलोक मे चित्रगुप्त परेशान होकर बार-बार अपना चश्मा पोंछकर , थूक से पन्ने पलट-रजिस्टर देख रहे थे। रिकॉर्ड तो ठीक था गलती पकड़ में नहीं आ रही थी। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी थी। लेकिन उसका जीव नहीं आया था, ना ही वह दूत लौटा था जो भोलाराम के जीव को लाने गया था। तब चित्रगुप्त ने इस वाक्य को कहा था।	1 2

QN. NO.		MARKS
24.	पाठ का नाम - यात्रा जापान की लेखिका का नाम - ममता कालिया उद्घाटन कार्यक्रम शुरू होने से पहले लेखिका और ऋचा मिश्र बाथरूम गए। वहाँ उन्होंने एक दिलचस्प नजारा देखा। बहुत सारी लड़कियां अपने पर्स से टूथब्रश और टूथपेस्ट निकालकर एक कतार में खड़ी थी। पूछने पर पता चला कि वहाँ की लड़कियां हर बार खाना खाने के बाद दांत साफ करती हैं। तब लेखिका उपर्युक्त वाक्य कहती है।	1 2
III.		
अ)		
25.	गोपिकाएं अपने आपको भाग्यशालिनी समझती है क्योंकि जिन आँखों से उन्होंने उद्धव को देखा था, वे आँख अब गोपिकाओं को देखने मिली है। उद्धव की आँखों से गोपिकाएं श्रीकृष्ण को देख रही है। गोपिकाओं को , उद्धव को देखकर बहुत आनंद हो रहा है। जैसे दर्पण में अपना रूप देखकर दृष्टि अति रुचिकर लगने लगती है, उसी प्रकार उद्धव के आँख रूपी आईने में कृष्ण के रूप के दर्शन कर गोपिकाओं को अच्छा लगता है।	3
26.	रहीम कहते है काम करना हमारे हाथ मे होता है उसके फल के बारे मे सोचना भाग्य/ ईश्वर के हाथ में है । हमें सिर्फ अपने कार्य करते रहना चाहिए। अच्छे कार्य का अच्छा फल हमें मिलेगा। रहीम उदाहरण इस तरह देते है कि, शतरंज के मोहरे (पाँसे) तो अपने हाथ में रहते है, खेलते हम है लेकिन दांव अपने हाथ में नहीं होता। किसी भी कार्य का अंजाम हम पर निर्भर नहीं होता।	3
आ)		
27.	कवि नरेंद्र शर्मा कहते है की कुछ भी बन बस कायर मत बन। खुद की रक्षा से भी बढ़कर मानवता की रक्षा करना तुम्हारा पहला कर्तव्य है। किसी के मिट जाने से भी मानवता बच जाए, उसकी रक्षा हो जाए। तभी सत्य की जीत होती है अपने निजी स्वार्थ के लिए हम मनुष्यता का नाश करें। मनुष्य जाति के लिए, उसके भलाई के लिए भले ही तू अपने आप को मिटा दे। अच्छाई के लिए आत्मसमर्पण कर दे। लेकिन दुष्टों के सामने सिर न झुकाना। कुछ भी बन बस कायर मत बन।	3
28.	कर्नाटक की गौरव गाथा गाते हुए कवि मानव कह रहे है कि दुनिया भर में माथा ऊंचा करने वाले टीपू सुल्तान की वीरता ,अपने बलिदान के लिए प्रसिद्ध रानी चेन्नम्मा इस धरती की देन है। प्रकृति का सुंदर रूप यहाँ देखने को मिलता है। ऐतिहासिक घटनाओं का प्रमुख क्रीड़ास्थल यह कर्नाटक ही है। भारतीयता कन्नडनाडु में बहुरूपों में सँवरती है। कर्नाटक में कावेरी नदी बहती है। यहाँ के बसवेश्वर , अक्कमहादेवी, रामानुज जैसे संतों ने अपने ज्ञान से संसार को प्रकाशित किया है। इस प्रकार धर्म, कला एवं संस्कृति की आराधना का केंद्र है कर्नाटक ।	3
29.	कवि दुष्यंतकुमार ने अपनी गजल “हो गई पीर पर्वत-सी “ में पीड़ित व्यक्ति की संवेदना को व्यक्त करते है। पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा पर्वत के समान बढ़ रही है। कवि चाहते है, वह पीड़ा गंगा नदी के समान पिघलकर बहे । असमानता, समस्याएं कुरीतियों की दीवारें है, वे तो हिल रही है। कवि चाहते है कि इनकी बुनियाद हिलनी चाहिए। पीड़ित व्यक्ति की हालत ऐसे सुधरे की सड़क- गली में चलते समय वह भी खुशी से हाथ लहरातें वे चलें।	3

QN NO.		MARKS
इ)		
30.	कविता का नाम - रैदास बानी कवि का नाम - रैदास इन पंक्तियों में रैदास समाज में समानता और सुखी संसार की कामना करते हुए कहते है कि रैदास ऐसे राज्य की कामना करते है, जहाँ संसार के सभी लोग सुखी रहें। सभी को अन्न मिले, सभी समान भाव से रहे और छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं हो। **<u>अथवा</u>** कविता का नाम - बिहारी के दोहे कवि का नाम - बिहारी इन पंक्तियों में कवि दूसरों के काम आने के बारे में बताते हुए कहते है कि चाहे नदी ,कूप , सरोवर छोटा हो या बड़ा गहरे हो या उथले ये जन और जानवर की प्यास बुझाने में समर्थ है। लेकिन सागर इतना अगाध और विशाल होने पर भी प्यास नहीं बुझा सकता।	1 2 1 2
31.	कविता का नाम -अधिकार कवियित्रि का नाम - महादेवी वर्मा महादेवी वर्मा इन पंक्तियों में कहती है कि जिस लोक में अवसाद नहीं ,वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा ? जो खुद अपने लिए जीता है, उसका जीना भी क्या ? जो परिस्थितियों का डटकर सामना करता है, वही असली जीना जीता है। जिसमे आग नहीं , जिसने जलना नहीं जाना, उसका भी जीना क्या जीना? वह तो खुशी से मर -मिटना भी नहीं जानता । जो दुख का सामना करना जानता है, मर -मिटना जानता है, वही मुस्कराना भी जानता है। **<u>अथवा</u>** कविता का नाम - एक वृक्ष की हत्या कवि का नाम - कुँवर नारायण कवि कई दिनों बाद घर लौटा तो देखा उनके घर के निकट जो पेड़ हुआ करता था वह कट गया है। वह पेड़ जिसके आस-पास कवि का बचपन बीता था, वह बूढ़ा हो गया था, पर ठाट उसकी हमेशा रहती थी। वह एक बूढ़े चौकीदार स नियुक्त उसके घर की रखवाली करता था।	1 2 1 2
	खंड -'ग'	
IV.		
अ)		
32.	बेला ने सारा फर्निचर उठाकर कमरे के बाहर रख दिया था। उसको पुराने फर्नीचर पसंद नहीं थे। वह नए खयालों की आजाद महिला थी। उसने अपने पति परेश से कहा कि वह इस पुराने और सड़े-गले फ़र्नीचर को उसके कमरे में रखने नहीं देगी। वह कहती है कि इन पुराने फ़र्नीचरों पर बैठने से तो अच्छा है की वह जमीन पर चटाई बिछाकर बैठना पसंद करेगी । **<u>अथवा</u>** सूखी डाली एकाँकी में एक सम्मिलित परिवार का चित्रण है। इसमें व्यक्ति ,परिवार और समाज में व्यापक रूप से व्याप्त आधुनिक संघर्ष और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को बड़ी सूक्ष्मता को नियोजित किया जाता है। दादाजी मूलराज अपने परिवार को बरगद के पेड़ के जैसा मानते थे। पेड़ से अलग होने वाली डाली की कल्पना से ही वे काँप उठते थे। उनकी आकांक्षा थी कि पेड़ की सब डालियाँ साथ-साथ बढ़ें , फलें-फूलें ,जीवन की सुखद शीतल वायु के स्पर्श से झूमें और सरसाये, परिवार के सारे लोग मिल-जुलकर खुशी से रहें।	5 5

आ)		
33.	भारवि शास्त्रार्थ में पंडितों को हराता था। पंडितों की पराजय को देखकर भारवि के मन में अहंकार बढ़ता जा रहा था। भारवि को अपनी विद्वत्ता का घमंड होने लगा। उसका गर्व सीमा का अतिक्रमण करने लगा। श्रीधर भारवि के पिता इसे सह नहीं सके। श्रीधर सोचने लगे कि अहंकार उन्नति में बाधक है। इसलिए पिता ने भारवि को सभी पंडितों के सामने उसे दंभी ,अज्ञानी कहकर उसकी ताड़ना की। भारवि के पिता श्रीधर नहीं चाहते थे की अहंकार के कारण उनके पुत्र की उन्नति रुक जाए। **<u>अथवा</u>** प्रतिशोध एक सांस्कृतिक एकाँकी है। इसमें महाकवि भारवि के जीवन से संबंधित घटना का वर्णन किया गया है। पिता ने भारवि को पंडितों के सामने जो अपमानित किया था। उससे क्रोधित होकर भारवि प्रतिशोध की आग में जलने लगता है। अपने पिता की हत्या करना चाहता है। लेकिन माता-पिता के वार्तालाप से पता चलता है की पिता भारवि के अहंकार को काम करने के लिए ही उसकी निंदा - अपमान किया था। इसके पीछे पुत्र की उन्नति और मंगलकामनाएं छिपी है। भारवि अपनी गलती के लिए पिता से सजा माँगता है और प्रायश्चित करना चाहता है। पिता कहते है की पश्चाताप ही प्रायश्चित है, माँ की सेवा करके जीवन सफल बनाने के लिए कहा, भारवि कहता है कि माँ- बाप की सेवा करना जीवन की चरम साधना है। भारवि को अगर जीवित रहना है तो उसे दंड मिलना चाहिए। तब श्रीधर उसे छः महीने तक ससुराल में जाकर उनकी सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करने का दंड देते है ।	4 4
V	खंड -'घ'	
अ)		
34.	i) वह एक दिन मेरे पास आया था । ii) ममता ने कहानी सुनाई। iii) हम तीन भाई है ।	1 1 1
आ)		
35.	i) माली पौधों को पानी देगा । ii) कबीर देश की सेवा करता था । iii) हमारा जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यस्त रहता है।	1 1 1
इ)		
36.	i) बेटी ii) अध्यापक iii) मुर्गा	1 1 1
ई)		
37.	i) बालोपयोगी ii) जलचर iii) नवजात	1 1 1
38.	i) सु + कर्म ii) ना + लायक	1 1
ऊ		
39.	i) महत्व + पूर्ण ii) प्रभाव + इत	1 1

VI		
अ		
40.	i) धोखा ii) संप्रदाय iii) अंतर्मुखी iv) संकीर्णता	1 1 1 1
आ		
41.	निबंध - मनोरंजन के साधन i) भूमिका - मनोरंजन का अर्थ और आवश्यकता ii) प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन iii) आधुनिक काल में मनोरंजन के साधन iv) उपसंहार **<u>अथवा</u>** पत्र लेखन i) स्थान , दिनांक , सम्बोधन , अभिवादन ii) पत्र का विषय : आरंभ , मध्य, अंत iii) समापन : हस्ताक्षर	 1 1 1 1 1 2 1
इ		
42.	i) हमें वैज्ञानिक मनोभावना को अपनाना चाहिए। ii) कठिन परिश्रम के बिना सफलता प्राप्त नहीं होती । iii) हमें आपस में प्रेम से जीना है ।	1 1 1